Mughal dynasty

मुगल वंश

- मुगल वंश 1526–1707
  - जहिरुद्दीन मुहम्मद बाबर (1526–1530)
  - हुमायूं (1530–40), (1555–56)
  - अकबर 1556–1605
  - जहाँगीर 1605–27
  - शाहजहाँ 1627–1658
  - औरंगजेब 1658–1707
- उत्तर मुगल काल 1707 — 1857

द्वितीय अफगान (सूर वंश)

- शेरशाह सूरी 1540 — 45
- इस्लामशाह सूर 1545–1553
- आदिलशाह
- सिकन्दर शाह सूर
  (1553–55)

By Pawan sir Career foundation

बाबर

- मृत्यु : 26 Dec 1530
- जन्म :- 14 Feb 1483
- पिता — उमर शेख मिर्जा
- माता —> कुतलुग निगार
- पिता का मृत्यु — 1594
- भारत का शासक 27 April 1526
- शासक : फरगाना (1594) → राजधानी :→ अंदिजान
- काबुल विजय के बाद पादशाह की उपाधि 1507 (मीर्जा का पद का त्याग)
- भारत में मुगल वंश की स्थापना (1526)
- पत्नी :- माहम अनगा → पुत्र → हुमायूँ (1508)
- युद्ध :
  - पानीपत का प्रथम युद्ध — 21 April 1526
  - खानवा का युद्ध — 16 March — 1527
  - चंदेरी का युद्ध → Jan 1528
  - घाघरा का युद्ध → 6 may 1529

Scanned with CamScanner

बाबर 1526–30

=> बाबर के सम्पूर्ण जीवन काल को समझने के लिए तीन भागों में बाँटकर समझेंगे

बाबर

- 1483–94 प्रारम्भीक जीवन
- 1494–1526 फरगना का शासक
- (1526–30) भारत का शासक

* प्रारम्भीक जीवन : 14 feb – 1483 – 1493

=> बाबर का पुरा नाम जाहिरउद्दीन मुहम्मद बाबर था।

=> इसका जन्म आफगानिस्तान के छोटा सा ~~कस्बा~~ क्षेत्र फरगना में 14 feb 1483 ई० को हुआ

=> पिता का नाम: उमरशेख मीर्जा ।

=> माता का नाम : कुतलुगनीगार खाँ

> Note :– माता के ओर से चंगेज खाँ के 14वाँ वंशज तथा पिता के ओर से तैमूर के 5वाँ वंशज माना जाता है।

=> बाबर चगताई तुर्क था। इनके पिता फरगना का शासक था। फरगना की राजधानी अंदिजान था।

=> तैमूर की मृत्यु के पश्चात उसका विशाल साम्राज्य उसके और चंगेज खाँ के अनेक वंशजो में विभक्त हो गया। उसी दौरान मिर्जा को फरगना का प्रान्त मिला था।

=> मिर्जा के मुख्य प्रतिद्वंदिता अपने भाई और समरकंद तथा बुखारा का शासक अहमदमिर्जा ~~का~~ और महमूद खाँ ।

=> अहमदमिर्जा और महमूद खाँ ने संयुक्त रूप से फरगना के राजधानी अंदिजान पर आक्रमण किया इस दौरान 1494 ई० में उमरशेख मिर्जा की मृत्यू हो गई। अब फरगना का सम्पूर्ण प्रशासनिक भार बाबर पर आ गया ।

Scanned with CamScanner

* बाबर फरगना के शासक के रूप से लेकर लुटेरे के जीवन तक। (1494 – 1526)

=> जब बाबर फरगना का शासक बना उस समय उसका उम्र लगभग 12 वर्ष था।

=> बाबर के पास कई कठिनाई थी :-
① अपने रिश्तेदारों से
② उजबेगों
→ उजबेग नेता शैबानी खाँ।

=> बाबर का उद्देश्य थी को :-
① अपने ~~प्रतिद्व~~ प्रतिद्वंदियों को सफाया करना
② समरकन्द एवं बुखारा पर अधिकार जमाना
③ अपने साम्राज्य को विस्तार करना एवं शांति स्थापित

समरकन्द :- समरकन्द उस समय एक प्रसिद्ध प्रान्त था। यह क्षेत्र कला, शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र था। समरकन्द फरगना के सीमा से लगा हुआ था

=> बाबर को पढ़ने - लिखने के समय में शासक बना दिया गया जिसके चलते उसका उचित शिक्षा न मिल पाई। फिर भी वह प्रशासनिक शिक्षा के साथ - साथ तुर्की एवं फारसी भाषा का अध्ययन किया।

व्यक्तित्व :- बाबर में जन्मजात गुण निहित था। उसमें व्यावहारिकता, कूटनीतिज्ञता एवं दूरदर्शिता जैसे गुणों का समावेश हो चुका था।

कठिनाईयाँ एवं परिस्थिति ने इसके चारित्रिक गुणों का विकास भी हो गया।

Scanned with CamScanner

=> राज्याभिषेक के बाद उसने अपने चाचा तथा समरकन्द और बुखारा के शासक अहमद मिर्जा से समझौता करने का प्रयास किया परन्तु यह प्रयास असफल रहा। अहमद मिर्जा और महमुद खाँ ने आक्रमण जारी रखा विवश होकर बाबर पुनः फरगना लौट आया।

=> **फरगना और समरकंद का हाथ से निकलना :-**

=> 1496-97 ई० में दो बार आक्रमण किया। पहला आक्रमण असफल रहा। लेकिन जब 1497 में दुबारा आक्रमण कर समरकन्द पर अधिकार कर लिया। यह अधिकार केवल तीन माह तक ही रहा। इसी बीच फरगना में विद्रोह की सूचना मिला। जैसे ही समरकन्द भी हाथ से निकल गया साथ ही फरगना पर आक्रमणकारियों ने अधिकार कर लिया।

बाबर का निर्वासित जीवन :-

बाबर अब राज्य विहिन हो गया उस दौरान उसका अधिकार सिर्फ खोजंद नामक छोटे से पहाड़ी प्रदेश पर बना रहा।

↳ अब बाबर के सहयोगीयों ने भी साथ छोड़ दिया। बाबर एक स्थान से दूसरे स्थान घूमता-फिरता रहा।

फरिश्ता लिखता है कि,

"भाग्य की गेंद अथवा शतरंज के बादशाह की भाँति वह (बाबर) इधर-उधर मारा-मारा फिरा, जैसे समुद्र के किनारे कंकड़ धक्के खाते फिरते हैं।"

=> **1498 ई०**

बाबर अपना धैर्य नहीं खोया और 1498 ई० पुनः अधिकार कर लिया फिर 1500 ई० में पुनः हाथ से निकल गया।

=> **शैवानी खाँ**

उजबेग नेता शैवानी खाँ ने बाबर को काफी परेशान किया लेकिन बाबर ने 1501 में शैवानी खाँ को पराजीत कर दिया और समरकन्द से भागने पर मजबूर कर दिया।

और यहीं पर अपनी चचेरी बहन आयशा से शादी भी किया लेकिन बाबर के लिए न ही समरकन्द पर अधिकार स्थाई रहा और न ही विवाह स्थाई रहा। सर-ए-पुल नामक स्थान पर शैबानी खाँ ने बाबर को पराजीत कर दिया।

⟹ काबुल पर अधिकार :- 1504

बाबर के भाग्य ने साथ दिया। बाबर अब अफगानिस्तान के ओर ध्यान दिया। इसी समय कुंदुज के गवर्नर खुसरोशाह की पराजय के बाद उसकी सेना बाबर के सेना में आ मिले। 1504 ई० में बाबर ने काबूल पर अधिकार कर लिया।

> Note :- 1507 ई० में बाबर ने मिर्जा के जगह पादशाह (बादशाह) की उपाधि धारण किया।

⟹ 1511-12 में बाबर का समरकन्द विजय की स्वप्न पूरा हुआ क्योंकि इस समय तक शैबानी खाँ की मृत्यु हो गई। लेकिन 1512 ई० में उजबेग नेता उबेदुल्ला खाँ ने बाबर को पराजीत किया। अब बाबर सदा के लिए समरकन्द अभियान विजय की योजना त्याग दिया।

⟹ काबूल से भारत विजय की योजना

बाबर 1526 ई० के पूर्व भारत पर 4 बार आक्रमण किया था। इस बात का उल्लेख बाबर अपनी आत्मकथा तुजुक ए बाबरी में भी करता है।

⟹ बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारत के पाँच मुस्लिम राज्य और दो हिन्दु राज्य का उल्लेख किया :-

मुस्लिम राज्य
- बंगाल
- दिल्ली
- मालवा
- गुजरात
- बहमनी

हिन्दु राज्य
- मेवाड़ → राणा सांगा
- विजयनगर → कृष्णदेवराय

⟹ भारत पर आक्रमण करने के लिए निमंत्रण देने वाला व्यक्ति :-

⟹ मेवाड़ शासक → राणा सांगा

⟹ इब्राहिम लोदी के चाचा → आलम खाँ लोदी

⟹ पंजाब सूबेदार → दौलत खाँ
↳ पुत्र → दिलावर खाँ
↳ बाबर ने इसे खान-ए-खाना की उपाधि

Note :- युद्ध नीति
- तुलगमा नीति → उजबेगों से
- बन्दूक का प्रयोग → इरानियों से
- घुड़सवारी → तुर्कों से / मंगोलों
- व्यूह रचना → अफगानों

⟹ उस्मानी पद्धती :- तोप को सजाने की कला
अर्थात :- बैलगाड़ी के दो पहिए के बीच तोप लगाना / रखना

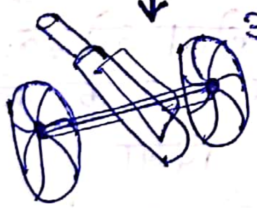

⟹ बाजौर और भेरी किला पर कब्जा :

⟹ बाबर ने 1518-19 ई० में बाजौर और भेरी के किले पर कब्जा किया यहाँ पर युसुफजई नामक जाति रहता था ये जाति फरगना पे पर आक्रमण करते और लूट-पाट कर वापस बाजौर और भेरी पहुँच जाते अतः इसी के बदला लेने के लिए बाबर ने यहाँ आक्रमण किया और अधिकार कर लिया पूर्ण रूप से बाजौर तथा भेरी 1920 में अधिकार कर लिया।

=> पानीपत के युद्ध के पूर्व बाबर द्वारा 4 आक्रमण :

① 1518–19 → बाजौर, भेरा के किले। → असफल
② 1519 → पेशावर – अधिकार करने में असफल
③ 1520 → बाजौर, भेरा → सफल
④ 1525 → पंजाब – सफल

पानीपत का युद्ध ÷ 21 April 1526

प्रथम पानीपत का युद्ध

21 April 1526

कारण (विजय का)
- इब्राहिम लोदी की दुर्बलता
- बाबर का सैन्य कुशलता
- भारत की राजनीतिक स्थिति
- बाबर द्वारा युद्ध के नए साधनों एवं रणनीति का प्रयोग
- इब्राहिम की सेना का दोषपूर्ण संगठन

- तोप का प्रयोग
- तुलगमा नीति का
- व्यूह रचना
- बन्दुक का प्रयोग
- मजबूत घोडे का प्रयोग.
- सैनिक उत्साह

इब्राहिमलोदी + बाबर

परिणाम
- दिल्ली सलतनत का अन्त
- नए वंशो की स्थापना
- बाबर के घुमन्तु जीवन समाप्त
- भारतीय सैनिक के दुर्बलता का पता चल गया।

→ भारत में मुगल वंश की स्थापना 1526

→ 27 April 1526 को बाबर राज्याभिषेक.

कलन्दर की उपाधि

=> बाबर पंजाब पर अधिकार करने के बाद बाबर बहुत तेजी दिल्ली के ओर कुच किया यह खबर ~~खबर~~ इब्राहिम लोदी को मीला तो इब्राहिम भी अपने सेना के साथ बहुत तेजी से पंजाब के तरफ बढा और पानीपत के मैदान में बाबर रुक गया।

=> बाबर पानीपत के मैदान में युद्ध की तैयारी करता रहा और इब्राहिम आक्रमण करने की प्रतिक्षा कर रहा था। 21 April को बाबर की सेना इब्राहिम की सेना पर टुट पड़ा। मध्यान्ह तक इब्राहिम की पराजित हो गया। इस युद्ध में इब्राहिम लोदी मारा गया।

Scanned with CamScanner

=> बाबर पानीपत के युद्ध जीतने के बाद दिल्ली पर कब्जा कर लिया हुमायूँ अपने सैनिक दल के साथ आगरा तक पहुँच गया और आगरा के किलों पर भी कब्जा कर लिया।

=> इस युद्ध में शम्साबाद बाद के शासक विक्रमजीत सिंह भी मारा गया।

=> बाबर 27 April 1526 को दिल्ली में अपने नाम से खुतबा पढ़वाया।

=> यदुनाथ सरकार बताते है कि इब्राहिम कि सेना में 20,000 घुड़सवार, 30,000 लगभग पैदल सैनिक जो अफगान सरदार ने भेजा था तथा बड़ी संख्या में हस्थ सैनिक भी थे, लेकिन यह आँकड़ा भी सही प्रतित होता है। सैनिक के संख्या को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है।

* अबूलफजल, बाबर के 12,000 घुड़सवार बताते है वही रशब्रुक विलियम 8,000 घुड़सवार की जानकारी देते है।

खनवा (Khanua) का युद्ध 16 March 1527

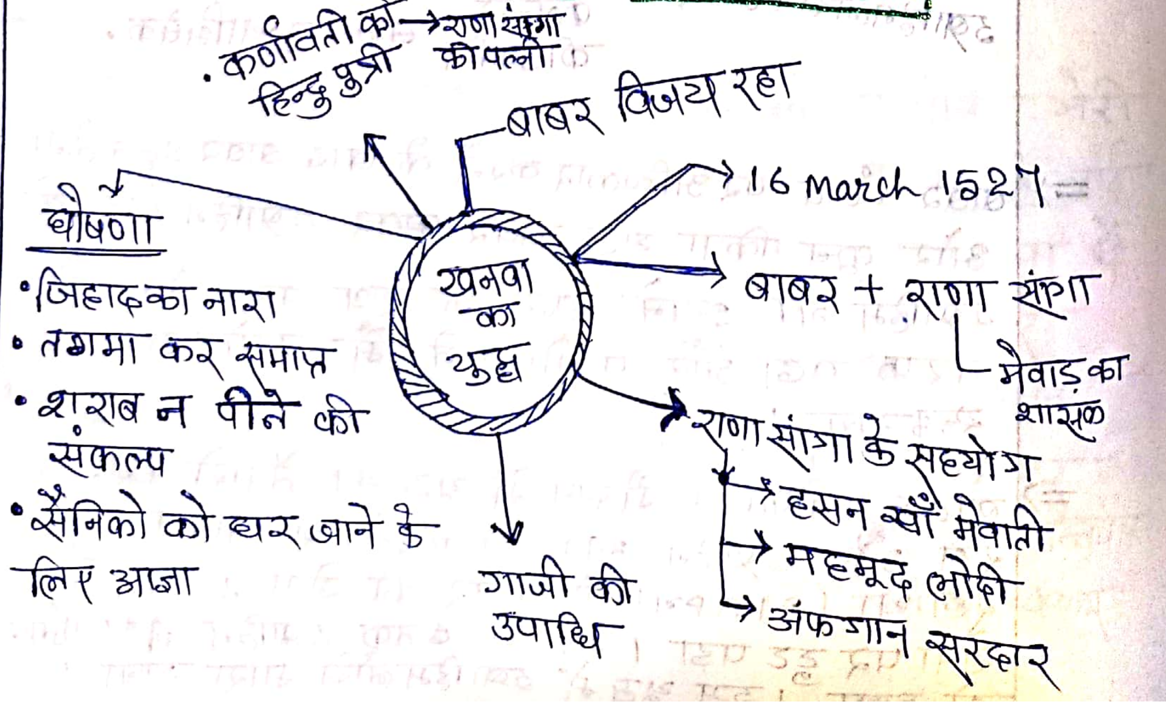

=> ~~आग~~ (खनवा युद्ध का कारण)

* राणा सांगा दिल्ली का शासक बनना चाहता था
  └ अर्थात राणा सांगा का महत्वकांक्षा

* राणा सांगा की बढ़ती शक्ति
* राणा सांगा बाबर को एक लुटेरा समझता था।
* बाबर से राणा सांगा को खतरा का भय
* राणा सांगा का सीमा आगरा तक आ पहुँची
* महमूद लोदी और सुबेदार हसन खाँ मेवाती ने बाबर पर आक्रमण करने के लिए उकसाया और सहायता देने का वचन दिया।
* बाबर द्वारा कालपी, बयाना, आगरा और धौलपुर पर अधिकार करने से राणा सांगा क्रोधित हो गया था।

युद्ध प्रारम्भ :

राणा सांगा अपने सैनिक एवं सहयोगियों के साथ बाबर पर आक्रमण करने के लिए निकल पड़ा। जैसे ही राणा सांगा बयाना पहुँचा बयाना के शासक डर कर भाग कर बाबर के शरण में पहुँचा।

=> बयाना पर अधिकार कर लेने के बाद राणा सांगा फतेपुर सिकरी पहुँचा तो बाबर ने ख्वाजा मेंहदी को आक्रमण करने के लिए भेजा। राणा सांगा ने ख्वाजा मेंहदी को पराजित कर दिया।

=> बाबर अपने सैनिक दलों के साथ खनवा के मैदान पहुँचा राणा सांगा भी खनवा के मैदान पहुँचा।

=> 15 march तक बाबर के साथ ऐसी स्थिति हो गई की राणा सांगा खनवा का युद्ध जीतने ही वाला था तब तक शाम हो गई युद्ध थम गया।

=> 16 मार्च के युद्ध से पहले बाबर ने अपने सैनिकों के सामने विभिन्न प्रकार के घोषणा किया।

Scanned with CamScanner

=> बाबर द्वारा खनवा युद्ध में किया गया घोषणा :-

- जिहाद का नारा
  └→ यह धार्मिक नारा
- तगमा कर की समाप्ति
  └→ सीमा कर यह मुस्लिम पर से हटा दिया गया।
- शराब न पीने की संकल्प
- सैनिकों को वापस घर जाने की स्वतंत्रता

Note:- युद्ध विजय के बाद बाबर ने गाजी की उपाधी धारण किया।

=> 16 मार्च को खानवा का युद्ध शुरू हुआ इस युद्ध में बाबर बिजय हो गया। राणा सांगा किसी प्रकार जान बचाकर भाग गया। परन्तु राजपुतों ने उसे बाद में विष देकर मार दिया।

युद्ध का महत्व :-

=> पानीपत के युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ

=> इस युद्ध में बाबर के वंश का सुदृढ़ता प्रदान करने का अवसर मिल गया।

=> राजपूतों कि शक्ति को गहरा धक्का लगा।

=> भारत में हिन्दु राष्ट्र निर्माण करने का स्वप्न राजपूतों का भंग हो गया।

=>

चंदेरी का युद्ध Jan 1528

खानवा युद्ध में राजपूत शक्ति को काफी धक्का लगा था लेकिन चंदेरी के शासक मेदनीराय एक सच्चे वीर राजपूत शासक था और वह खनवा युद्ध का बदला लेने के लिए उतावला था।

=> बाबर जब राजपुताना पर अधिकार करने लगा तो मेदनीराय से संघर्ष निश्चित हो गया ।

=> बाबर मेदनीराय से युद्ध करने से पहले उसे चंदेरी के बदले शमसाबाद देने का प्रस्ताव रखा परन्तु मेदनीराय ने इसे ठुकरा दिया ।

=> बाबर इससे काफी क्रोध हो गया और अलवर, चंदवार, रापड़ी, इटावा पर कब्जा करते हुए ~~कुआ~~ चंदेरी के किले को घेर लिया राजपूत दुर्ग की रक्षा न कर सके

=> Jan 1528 ई० में मेदनीराय और बाबर की सेना के बीच युद्ध मेदनीराय पराजीत हो गया ।

=> मालवा शासक नासिरुद्दीन के पौत्र अहमदशाह को चंदेरी का प्रशासक बनाया गया । और वह 50 लाख रुपया देना स्वीकार किया ।

*** चंदेरी युद्ध का फायदा :**

=> बाबर का अर्थव्यवस्था में सुधार

=> मेदनीराय के दो पुत्री का विवाह बाबर ने अपने दो पुत्रों हुमायूँ तथा कामरान से करवा दिया ।

=> राजपूतों की बची-खुची शक्ति शिथिल पड़ गई ।

घाघरा युद्ध 6 May 1529

=> जब बाबर चंदेरी के युद्ध में व्यस्त था तो बिहार, U.P वाले क्षेत्र के अफगान अपनी विजय योजना बना रहे थे

=> फर्मुली और नुहानी खाँ अभी भी बाबर के सत्ता को पुरी तरह स्वीकार नहीं किए थे ।

=> अफगान अवध में विद्रोह कर चुका था

=> शमसाबाद और कन्नौज पर अधिकार जमाने के

Scanned with CamScanner

बाद बिहार अफगानी आगरा विजय की योजना बना रहे थे।

=> बंगाल के शासक नुसरतशाह ने अफगानीयों को सहायता करने का वचन देकर उसका हौसला बढ़ा दिया था।

=> बाबर अपने सैनिको के साथ बड़ी तेजी से अवध के ओर बढ़ा यह खबर सुनते ही अवध में अफगानों का नेतृत्व कर रहे बिब्बन बंगाल भाग गया।

=> बिहार में महमूद लोदी अफगानों का नेतृत्व कर रहा था
=> महमूद लोदी चुनार के दुर्ग को घेर लिया था बाबर तेजी से चुनार के तरफ बढ़ा महमूद लोदी बंगाल भागने का पलायन बनाया तब तक बाबर ने नुसरतशाह को शरण न देने की प्रस्ताव भेजा परन्तु निसरतशाह इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

=> 6 मई 1529 ई० को अफगान सैनिक और बाबर के सैनिक घाघरा नदीं के तट पर घमासान युद्ध किए इस युद्ध में बाबर का विजय हो गया।

= Note:- बाबर का यह भारत में अंतिम युद्ध था।

=> **बाबर का मृत्यु :-**

बाबर को काबुल में बिद्रोह का खबर मिला वह दबाने गया परन्तु बाबर को हुमायूँ के बीमार होने का खबर मिला और वापस आ गए।

बाबर ने 23 Dec को हुमायु को उत्तराधिकारी घोषित किया और तीन दिन बाद अर्थात 26 Dec 1530 ई. को मृत्यु हो गया।

=> 48 वर्ष में बीमार के कारण बाबर की मृत्यु हो गई।

Note :- बाबर के शव को आगरा के नूर अफगान बाग में रखा गया बाद में काबुल ले आया गया।

प्रो० सतीशचंद्र के अनुसार, बाबर के मृत्यु लाहौर के निकट हुआ
बाबरनामा → बाबर की मृत्यु आगरा में हुई।

बाबर की उपलब्धि

=> सड़कों की माप → गज-ए-बाबरी

=> खेल → गंजीफा → ताश खेलना
→ इश्कबाजी → कबूतरों का खेल

=> बाग लगवाया → आरामबाग — ज्यामितिय आधार पर → नुरे अफगान

=> सिक्का → शाहरुख नामक सिक्का

=> बाबरनामा नामक ग्रंथ की रचना (चगताई तुर्की भाषा)

* बाबरनामा का अनुवाद

भाषा	अनुवादक
* फारसी →	पायन्दा खाँ + अब्दुर्रहीम खानखाना
* अंग्रेजी →	श्रीमती बेवरिज

=> बाबर संगीतप्रेमी था।

=> तुजुक-ए-बाबरी - आत्मकथा → तुर्की भाषा

=> फारसी मुगलों का दरबारी भाषा था।

=> मुबईयान नामक एक पद शैली का विकास

=> बाबर का मकबरा → काबुल

Scanned with CamScanner